ऐसा सौन्दर्य निखारें जिससे सारा जहान आलोकित हो

इस भौतिक जगत में अनिष्ट कर्मों से जब मनुष्य की आन्तरिक सुन्दरता समाप्त हो जाती है तब वह बाहरी रूप से ही सुन्दरता प्रदर्शित करने की कोशिश करता है। इसके लिए तरह-तरह के कर्मकाण्ड, स्थूल वस्तुओं का उपयोग, खान-पान, सौदर्य प्रसाधन, फैशन तथा व्यायामशालाओं आदि में जाकर सौदर्य को निखारने की कोशिश करता है किन्तु यह सब कुछ निष्फल साबित होता है। कुछ हद तक बाहरी रूप से हो भी जाता है लेकिन आन्तरिक कुटिलता ज्यों की त्यों बनी रहती है। जिसके कारण न तो वह स्वयंप्रिय न तो लोकप्रिय न ईश्वर प्रिय। हड्डी-मांस के पिंजर को बाहरी रूप से सजा देना ही सच्चा सौंदर्य नहीं है। ऋषि, महर्षि, मनीषी, तपस्वी तथा राजयोगियों ने इसकी महत्ता को कभी प्रतिपादित नहीं किया है। यदि प्रतिपादित किया भी है तो सिर्फ आत्मिक सौदर्य को निखारने के लिए। बनावटी शारीरिक सौन्दर्य मनुष्य को आध्यात्मिक पथ से दिग्भ्रमित करता है जबकि आन्तरिक सुन्दरता मनुष्य को अतीन्द्रिय सुख का अनुभव कराती है तथा दूसरों को भी अपने आभा से आलोकित करती हैं। आखिर क्या है आन्तरिक सुन्दरता ?

आन्तरिक सुन्दरता मनुष्य जीवन की शोभा है। सुख-चैन की पथगामिनी है। प्रेम, शान्ति, आनन्द, पवित्रता, दिव्यता, मधुरता, सहनशीलता, हर्षितमुखता ये आत्मा के मौलिक गुण हैं। जब यह मनुष्य के अन्दर नवोदित अवस्था में होते हैं तो उससे मनुष्य के अन्दर एक सुन्दर व्यक्तित्व तथा आन्तरिक आभा का निर्माण होता है। बाहरी तौर पर मनुष्य की संरचना कैसी भी हो परन्तु यह एक ऐसी अलौकिक सुन्दरता का निर्माण करते हैं जिसकी तरफ आकर्षित होने वाला व्यक्ति भी इस सच्चे पथ की ओर अग्रसर हो पड़ता है। वेदों, पुराणों तथा इतिहासकारों ने इसी सुन्दरता की बात को जगजाहिर किया है क्योंकि इस सुन्दरता के तेजस्वी प्रकाश से पूरा जहाँ आलोकित होता है।

काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, घृणा, आलस्य, द्वेष ये मनुष्य की आन्तरिक सुन्दरता को मलीन करते है। ये ऐसे तत्व हैं जो मनुष्यात्मा के मौलिक गुण को क्षीण कर उसे पतन की ओर धकेल देते हैं जिसमें मनुष्य दिशाहीन होकर एक ऐसे जाल में फंस जाता है कि जीवन नीरस, कलुषित विलासी तथा कांटों के मुआफिक हो जाता है। यह इतना गंभीर दलदल है कि इससे चाहते हुए भी मनुष्य को मुक्ति नहीं मिल पाती है। आन्तरिक सुन्दरता एक नेत्र भी है। बुरे कर्मों के साये से ये नेत्र धूमिल हो जाते हैं इसलिए बाह्य आंखों से दिखायी देने वाली चीजों के जरिये ही मानव स्वयं को संवारने की कोशिश करता है। यह एक मृगतृष्णा के समान होता है जिसके लिए इतना सब करने के बावजूद भी उसके सौन्दर्य की चाह पूरी नहीं होती है।

आन्तरिक सुन्दरता आत्मा का निजी गुण है। सिर्फ इसे जागृत करने की जरूरत होती है। जब हमें यह पूर्ण रूप से निश्चय हो जाये कि हम इस पांच तत्वों के शरीर में एक अविनाशी आत्मा है और ये अवगुण हमारे नहीं हैं, हमारा तो गुण सुख-शान्ति, पवित्रता है। इस स्मृति के जरिये हम आध्यात्मिकता को महत्व देते हुए उस सुप्रीम नायक परमात्मा से अपने मन के तार जोड़ेगे तो उसे मिलने वाली ऊर्जा से हमारी आत्मा की शक्ति सुषुप्तावस्था से जागृत हो जायेगी। इस ज्ञान सागर सूर्य की शक्तियों रूपी किरणे चमत्कारिक काम करती है। जैसे सूर्य की रोशनी से कीचड़ सूख जाता है उसी तरह से ज्ञान सूर्य परमात्मा की किरणों के प्रवाह को अपने अन्दर समाहित करने से आत्मा के उपर चढ़े बुराईयों की मलीनता के कीचड़ सूख जायेगा और आत्मा का सच्चा सौन्दर्य निखर उठेगा।

इस तरह की अलौकिक सुन्दरता केवल स्वयं को ही नहीं बल्कि जो भी उनके सम्बन्ध-सम्पर्क में आते है वे भी इस सुन्दरता को अपने अन्दर महसूस करने लगते है तथा उनकी अनेक समस्यायें, चिन्तायें तथा दु:ख दूर हो जाते है। इसी प्रकार की सुन्दरता ने प्राचीन काल के साधकों, तपस्वियों, राजयोगियों तथा महापुरूषों को आज भी जीवन्त रखा है। इसलिए इस भौतिकवादी, भोगवादी युग में इन आधार स्तम्भों को अपनाकर सच्ची सुन्दरता निखारें जो खुद के लिए तथा दूसरों के लिए भी सुखदायी हो।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com